ज़ैनब) रोती पीटती फिरती थीं।

35– सुकैना ''सकीना'' विरह की आग से गुहार करती थी बार–बार पुकारती थी, संसारों के पालने वाले (ख़ुदा) से गुहार लगाती (मदद को पुकारती)

36– ज़ैनुल आबेदीन ज़िल्लत/अपमान के बन्दी थे, दुश्मनों ने कई बार उन्हें मार डालने का संकल्प/इरादा किया।

37– फिर उसके बाद तो दुनिया पर मिट्टी (पड़ी) है हमे इसी दुनिया के लिए मरने का प्याला पिलाया गया।

38– यह मेरी बीती (बिपता) है, विस्तार से मेरी हालत (का बयान) है, ए सुनने वालों! हम पर रोओ।

(1), (2) ये दोनों रसूल (स0) के उपनाम (लक़ब) हैं जो क़ुर्आन मजीद में भी आये हैं। □□□

---

# एक 'सलाम' अनुवाद के साथ

## मूल

हैदर(अ0) की सना मुझसे सुनाई नहीं जाती,
वह कौन सिफ़त है कि जो पाई नहीं जाती।
लज़्ज़त यह किसी चीज़ में पाई नहीं जाती,
जुज़ आले नबी(स0) ग़ैर से खाई नहीं जाती।
करता है वह रहम और बशर इज्जो तबख़्तुर,
बन्दों की ख़ुदी, उसकी ख़ुदाई नहीं जाती।
कट जायगी अपनी यूँ ही, ए ख़ाना बदोशी,
दो दिन के लिए छावनी छाई नहीं जाती।
कहती थी लईनों से यह शमशीरे अलमदार,
अब शेर के क़ब्ज़े से तराई नहीं जाती।
क़ासिम है मुसिर बहरे रिज़ा शाह है खामोश,
दौलत ज़ने बेवा की लुटाई नहीं जाती।
मरने से जवाँ बेटे के यह हो गई हालत,
लाश आप उठाते हैं उठाई नहीं जाती।
बेशीर को आग़ोश से रख्खा है लहद में,
पर चाँद सी तसवीर छिपाई नहीं जाती।
तक़रीर की क्या बात है, क्या कहना है 'यूनुस',
पर मदहे ख़ामोशी भी सुनाई नहीं जाती।

**'यूनुस' ज़ैदपूरी**

## अनुवाद

महिमा अली(अ0) की मुझसे सुनाई नहीं जाती,
वह कौन भलाई है जो पाई नहीं जाती।
यह बात किसी चीज़ में पाई नहीं जाती,
मासूम को छोड़, और से खाई नहीं जाती।
वह करता दया, मीन मनुष्य करता है उत्पात,
मानव का अहम् उसकी ख़ुदाई नहीं जाती।
कट जायगी अपनी यूँही बनजारों के जैसी
दो दिन के लिए छावनी छाई नहीं जाती।
धिक्कारितों से कहती थी अब्बास की तलवार,
अब शेर के पन्जे से तराई नहीं जाती।
क़ासिम को चचा कैसे ही दें रन की इजाज़त,
विधवा की कमाई है, लुटाई नहीं जाती।
मरने से तरुण बेटे के यह हो गई स्थिति,
लाश आप उठाते हैं उठाई नहीं जाती।
यूँ गोद से छःमाहे को रख्खा है गढ़े में,
पर चाँद सी छाया है छुपाई नहीं जाती।
कहने की भी क्या बात है क्या कहना है 'यूनुस',
पर मूक प्रशंसा भी सुनाई नहीं जाती।

**मु0 र0 आबिद**